कोविड–19 महामारी में ग्रामीण आर्थिकी एवं उद्यमशीलता विकास

सुरेश कुमार[1], इन्दु रावत[1], सोनू शर्मा[1] डी0वी0 सिंह[1], एवं निशा वर्मा[2]
[1]भा.कृ.अनु.प.–भारतीय मृदा एवं जल संरक्षण संस्थान, देहरादून (उत्तराखण्ड)
[2]भा.कृ.अनु.प.–भारतीय कृषि प्रणाली अनुसंधान संस्थान, मोदीपुरम, मेरठ (उत्तर प्रदेश)

कृषि ग्रामीण भारत का मुख्य व्यवसाय एवं ग्रामीण अर्थव्यवस्था तथा रोजगार का प्रमुख स्त्रोत रहा है। भारत में असंगठित क्षेत्र विश्व में सबसे बड़ा है और इस क्षेत्र का देश के सकल घरेलू उत्पादन (जीडीपी) में महत्वपूर्ण योगदान है। जिस मौसम में कृषि संबधित कार्य कम होते हैं, उस दौरान किसान/श्रमिक रोजगार की तलाश में शहरी क्षेत्रों की ओर पलायन करते हैं। कोविड–19 वैश्विक महामारी के दौरान आवाजाही और आर्थिक गतिविधियों पर कड़े प्रतिबंध लगाए गए। इससे अनिवार्य वस्तुओं और सेवाओं से सबंधित गतिविधियों में रूकावट के कारण गांवो से शहर आये श्रमिकों को अपनी आजीविका गंवानी पड़ी। 2020 में अप्रैल–जून के दौरान शहरी क्षेत्रों में बेरोजगारी दर पिछले वर्ष की इसी अवधि की तुलना में दोगुना (21 प्रतिशत) थी। इस स्थिति में ग्रामीण स्तर पर उद्यमशीलता को बढ़ावा देने की जरूरत हैं जोकि कृषि आधारित या गैर कृषि आधारित हो सकती है। इसके लिए गांवो में जुझारू किसानों को पहचान कर उन्हें उचित प्रशिक्षण देने की आवश्यकता है जिससे उनमें स्वरोजगार के प्रति आत्मविश्वास पैदा हो और वो अपनी आजीविका की नई शुरूआत कर सकें । इस लेख में उद्यमशीलता के कारक, उद्यमशीलता विकसित करने के तरीके बताने के साथ ही कुछ सफल लघु उद्योंगो के उदाहरण दर्शाये गये हैं।

नोवेल कोरोना वायरस संक्रमण के कुछ मामले सबसे पहले चीन में सामने आए और उसके कुछ माह बाद देखते ही देखते इसने वैश्विक महामारी का रूप धारण कर लिया। इस महामारी के कारण वैश्वीकृत दुनिया की एक दूसरे के साथ मजबूती से जुड़ी हुई प्रणालियां पूरी तरह से बदल गई। इस वायरस पर काबू करने के प्रयास के तौर पर अलग अलग देशों की सरकारों ने आने जाने तथा सामाजिक मेल–जोल पर रोक लगा दी जिसके कारण इस समय दुनिया की 7.8 बिलियन की आबादी में से एक तिहाई से अधिक आबादी अपने घरों में बंद रहने को मजबूर है। कोरोना वायरस की महामारी के कारण वैश्विक स्वास्थ्य संकट गहराता जा रहा है और लॉकडाउन नया नियम बन गया है। अब यह धारण तेजी से बन रही है कि आने वाले समय में जब तक कोरोना वायरस खत्म होगा तब तक दुनिया की सूरत हमेशा हमेशा के लिए बदल जाएगी।

आज इस बात को लेकर आम सहमति है कि अगले डेढ़ से दो साल तक पूरी दुनिया किसी न किसी रूप से संभवतः कोविड–19 के तात्कालिक खतरे से जूझती ही रहेगी और उसके बाद भी पुनर्निमाण और इसके स्थाई प्रभाव निःसंदेह कई वर्षों तक महसूस किए जाते रहेंगे। दुनिया के कई हिस्सों में सीमाए बंद हैं, हवाई अडडे, होटल और और उद्योग प्रभावित हुए हैं। ये अभूतपूर्व उपाय कुछ समाजों के सामाजिक ताने–बाने को तोड़ रहे हैं और कई अर्थव्यवस्थाओं को बाधित कर रहें हैं, जिसके परिणामस्वरूप बड़े पैमाने पर लोगों की नौकरिया छूट रही हैं और व्यापक पैमाने पर भूख की छाया बढ़ रही है। वहीं जोखिम बढ़ने से घरेलू निवेश में सुधार में भी देरी होने की संभावना दिख रही है।

लॉकडाउन के कारण शहरी क्षेत्रों में काम करने वाले ग्रामीण श्रमिकों का अपने–अपने क्षेत्रों में

भारी मात्रा में वापस पलायन हुआ। कोविड लहरों के दौरान समुचित परिवहन व्यवस्था न होने के कारण देश का किसान अपने अन्न, फल, सब्जी व दूध उत्पादों को बाजार में सुगमता से नहीं बेच पाया। इसके अतिरिक्त किसान व खेतीहर मजदूरों के बड़ी संख्या मे संक्रमित होने के कारण ग्रामीण सप्लाई श्रंखला पर भी बुरा असर पड़ा जिसके फलस्वरूप देश की 50 करोड़ से भी अधिक ग्रामीण आबादी गरीबी व बेरोजगारी के दुर्गम दुष्चर्क में फस गई। इस प्रकार देश के लघु व सीमान्त कृषकों की बहुलता वाली ग्रामीण आबादी (लगभग 80 प्रतिशत) का वर्तमान में जीवन यापन हेतु संर्घषमय दिखाई देना एक विकट समस्या है।

ग्रामीण उद्यमशीलता का विकास

उपरोक्त समस्या से निपटने के लिए वर्तमान समय में केवल एक ही उपाय संभव हो सकता है कि ग्रामीण क्षेत्रों में ही रोजगार के अतिरिक्त अवसर उपलब्ध करवाए जाएं। यह कार्य ग्रामीण क्षेत्रों में उद्यमशीलता के विकास से ही हो सकता है। उद्यमशीलता एक ऐसी आर्थिक कार्यव्यवस्था है जिसमें कुछ आवश्यक गुणों के साथ लोग पैसा कमाने हेतु किसी उद्यम के विषय में समझने, पहल करने, स्थापना व संचालन करने तथा प्रबन्ध करने की प्रक्रियाएं पूरी कर सकते हैं। वर्तमान परिवेश में उद्यमशीलता के विकास द्वारा ही ग्रामीण क्षेत्रों का आर्थिक व सामाजिक उत्थान सुनिश्चित कर खुशहाली का माहौल पैदा किया जा सकता है क्योंकि एक उद्यम केवल एक व्यक्ति को ही अतिरिक्त रोजगार प्रदान नहीं करता बल्कि उससे आस–पड़ोस के कई लोगों को रोजगार के अवसर प्राप्त होते हैं।

संभावित ग्रामीण उद्यम

ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि आधारित उद्यमों के विकास पर ही बल दिया जाना चाहिए। इससे उद्यमों हेतु आवश्यक संसाधनों की उपलब्धता स्थानीय हो जाती है तथा इन संसाधनों के विभिन्न पहलुओं के बारे में उद्यमी को अच्छा–खासा ज्ञान पहले से ही रहता है जिससे उद्यमों के सफल होने की उम्मीदें काफी बढ़ जाती हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में विभिन्न प्रकार के उद्यम जैसे– रेशमकीट पालन, मशरूम उत्पादन, मधुमक्खी पालन, जैविक खाद्य सामग्री जैसे– दाल, मसाला, चावल, आटा, बेकरी, खाद्य तेल आदि के उद्योग, सुअर पालन, मुर्गीपालन, भेड़–बकरी पालन, खादी ऊनी कपड़ा उद्योग, लकड़ी फर्नीचर उद्योग, चमड़ा उद्योग, बीज उद्योग, पुष्प उद्योग तथा ग्रामीण कृषि यंत्रों संबंधी उद्योग आदि किये जा सकते हैं। इससे ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसरों के बढने से लोग खेती के अतिरिक्त आय भी प्राप्त कर सकते हैं।

उद्यमिता के कारक

ग्रामीण क्षेत्रों में उद्यमिता विकास हेतु केवल सरकार द्वारा उपलब्ध कराई गई आर्थिक सहायता तथा अनुदान ही काफी नहीं है, बल्कि विकास संस्थाओं को निरंतर उद्यमियों की दक्षताओं को बढ़ाने के प्रयास भी करने होंगे। वस्तुतः उद्यमियों की दक्षताएं व क्षमताएं ही उद्यमशीलता के विकास के आधार हैं। उद्यमिता के लिए व्यक्ति विशेष में कुछ गुणों जैसे–उपलब्धियों के प्रति भूख, दूसरों को प्रभावित करने की क्षमता व इच्छा, अपनी क्षमताओं का पूर्ण ज्ञान, जोखिम उठाने का संकल्प, असफलताओं या गलतियों की स्वीकारोक्ति, कामयाबी की प्रबल इच्छा, समय पालन, दृढ़ता, मिलकर काम करने की क्षमता व प्रतिस्पर्धा, भावी भविष्य की चाह व परिकल्पना, धनात्मक मानसिक सोच, स्वयं में विश्वास, प्रबन्धन की क्षमता तथा समाज कल्याण की भावना आदि का होना आवश्यक है। उपरोक्त गुण हीं किसी व्यक्ति को उद्यमिता जैसी कार्यव्यवस्था में सफल बना सकते हैं। इन गुणों की सम्पन्नता जिस व्यक्ति में जितनी अधिक होगी, वह उतना ही सफल उद्यमी होगा। उद्यमशीलता के विकास हेतु आवश्यक ये सभी गुण किसी व्यक्ति विशेष में जन्मजात भी हो सकते हैं व नहीं भी तथा इन सभी गुणों को सीखा व विकसित

भी किया जा सकता है। अतः उद्यमशीलता के विकास हेतु ग्रामीण लोगों के उचित प्रशिक्षण द्वारा इन गुणों के विकास एवं वृद्धि पर सदैव ध्यान देना चाहिए।

प्रसार सेवाओं द्वारा ग्रामीण उद्यमशीलता का विकास

ग्रामीण क्षेत्रों में उद्यमशीलता के विकास, उद्यमियों को आत्मनिर्भर व सक्षम बनाने हेतु उनमें आवश्यक दक्षताओं के विकास, नये–नये उद्यमों की स्थापना व उनकी चिरंतरता आदि के लिए प्रसार सेवाओं की भूमिका मुख्य सिद्ध हो सकती है। इसके लिए प्रसार कार्यकर्ताओं को सबसे पहले नियोजित जनप्रचार के द्वारा लोगों को प्रेरित कर संभावित उद्यमियों को आगे लाना होगा। आत्मनिर्भरता व सक्षमता प्रदान कराने हेतु नियोजित प्रशिक्षण कार्यक्रमों द्वारा उनमें आवश्यक दक्षताओं व क्षमताओं का विकास करना होगा। उद्यमियों में दक्षताओं के निखरने के बाद उद्यम इकाईयों की स्थापना हेतु समयानुसार आवश्यक मदद प्रदान करनी होगी। उनकी चिरंतरता एवं वृद्धि के प्रयास करने होंगे क्योंकि उद्यमशीलता का विकास पूर्णतया उद्यमियों की सक्षमताओं व आत्मनिर्भरताओं पर आधारित होता है। अतः प्रसार कर्मियों को सदैव ध्यान रखना होगा कि उद्यमियों में पराश्रय की भावना कदापि भी पैदा न होने पाये। इसके लिये प्रसार कार्यकर्ताओं को उद्यमियों के कार्यों को स्वयं कभी नहीं करना चाहिए तथा हर संभव उन्हीं के द्वारा कार्यों को कराने के प्रयास करने चाहिए। इस पूर्ण प्रक्रिया में प्रसार–कार्यकर्ताओं को निम्नलिखित तीन चरणों में प्रयास करने होंगेः–

पहला चरणः–

सबसे पहले गांवों में ऐसी पृष्ठभूमि का निर्माण किया जाए जो उद्यमियों के उद्‌भव व विकास में सहायक हो। जिसके लिये प्रसार कार्यकर्ताओं को निम्नलिखित बिंदुओं का अनुसरण करना होगाः–

- उद्यम संबंधित जानकारियों का नियोजित तरीकों द्वारा जनप्रचार करना।
- लोगों को उनकी वर्तमान व भविष्य की आवश्यकताओं के बारे में समझाना जिससे वो उद्यमिता की ओर अग्रसर हो सकें।
- संभावित उद्यमियों की पहचान व छांट करना।
- नियोजित प्रशिक्षण कार्यक्रमों द्वारा संभावित उद्यमियों में उद्यमी गुणों का विकास, दक्षताओं में वृद्धि एवं उद्यमों से संबंधित आवश्यक शिक्षा का प्रबन्ध करना।
- स्थानीय परिस्थितियों के अनुरूप नये उत्पादों व प्रक्रमों को तलाशनें में उद्यमियों की मदद करना।
- चयन किये गये उद्यमों के बारे में उद्यमियों को तकनीकी, आर्थिक व वित्त संबंधी जानकारी देना।
- उद्यमियों में उत्तम उत्पादों की पहचान, अच्छे अवसरों की परख, बाजार का आंकलन, साधनों के उचित उपयोग तथा लेखा संबंधी दक्षताओं का विकास करना।
- दूसरे लोगों से मिलना एवं उन्हें समझाकर प्रभावित करने की क्षमताओं का उद्यमियों में विकास करना।
- उद्यमियों को उद्यम संबंधी आवश्यक जानकारी व सलाह प्राप्त करने के लिये प्रशिक्षित लोगों की संस्थाओं का निर्माण करना अथवा जानकारी की उपलब्धता सुनिश्चित करना।

दूसरा चरणः–

पहला चरण समाप्त होने के साथ–साथ ही अच्छे उद्यमी प्रेरित होकर अपनी ईकाइयां स्थापित करने के लिए आगे आ जायेंगे। इस समय प्रसार सेवाओं को उनके उद्यमों की स्थापना तथा परिचालन हेतु नीचे लिखे बिन्दुओं पर मदद करना आवश्यक होगा।

- इकाईयों के पंजीकरण व लाइसेंस आदि उपलब्ध कराने में उद्यमियों की मदद करना।
- वित्त भूमि एवं तकनीकी जानकारी जो उद्यमों की स्थापना के लिये आवश्यक

हो, के प्रबन्ध में उद्यमियों की मदद करना।

- कच्चा माल जो उत्पाद हेतु आवश्यक हो उसकी उपलब्धता व खरीददारी व उद्यमियों का पथ–प्रदर्शन करना।
- उत्पादन संबंधी तकनीकी समस्याओं, बजट तथा कार्मिक प्रबन्ध में उद्यमी की मदद करना।
- उत्पादों की बिक्री हेतु विज्ञापनों, पैकिंग व बिक्री आदि के प्रबन्ध में सहयोग देना।
- समय–समय पर उद्यम संबंधी नई जानकारियों से उद्यमियों को अवगत कराते रहना।
- उद्यमियों के कुछ समूहों का निर्माण हो जहां वो अपनी सफलताओं, विफलताओं व समस्याओं पर विचारों का आदान–प्रदान कर सकें।

तीसरा चरण –

उद्यम इकाईयों की स्थापनाओं के बाद प्रसार सेवाओं को वे सभी प्रयास करने होंगे जो एक उद्यम की वृद्धि, आधुनिकीकरण, विविधीकरण, तकनीकी सुधार, बीमार इकाईयों के पुनर्रूत्थान तथा चिरंतरता हेतु आवश्यक हों। इसके लिए नीचे दिये गये बिंदुओं का अनुसरण करना आवश्यक होगा।

- उद्यमों के आधुनिकीकरण, विविधीकरण, विस्तार एवं उत्पादन प्रतिस्थापन में मदद करना।
- उद्यमों की पूर्ण क्षमताओं के उपयोग हेतु अगर अतिरिक्त वित्त आवश्यक हो तो उसके प्रबन्धन में उद्यमियों को सहयोग प्रदान करना।
- उद्यमों की सफलताओं, विफलताओं, बीमारियों, कम उत्पादन, लाभ–हानि के उत्तरदायी कारकों के निदान हेतु उद्यमियों की सहायता करना।
- •सरकारी नीतियों व कानून संशोधन आदि जो संबंधित उद्यमियों को प्रभावित करते हों, उनसे उद्यमियों को समय–समय पर अवगत कराना।
- बाजार के नये स्रोतों को तलाशने में सहयोग करना जिससे उद्यमी अधिक उत्पादन ले सकें।
- उत्पादों की गुणवत्ता जांच व कम लागत में गुण वृद्धि की संभावनाओं की तलाश में

उद्यमियों की मदद करना।

- ग्रामीण क्षेत्रों में कुछ ऐसे सेवा केन्द्रों को खुलवाना जो सभी इकाईयों को उत्पादन, प्रबन्धन, बिक्री तथा परामर्श आदि आवश्यक सेवायें प्रदान कर सकें।

उद्यम इकाईयों के उदाहरण

सोया आधारित उद्यम इकाई

अपने पोषण मूल्य और स्वास्थ्य लाभों के कारण सोयबीन एक महत्वपूर्ण खादय वस्तु के रूप में जाना जाता है। इसमें प्रोटीन की मात्रा उच्च तो वसा और कार्बोहाइड्रेट की मात्रा कम होती है और इसमें कोलेस्ट्रॉल नहीं पाया जाता है। सोयाबीन में व्याप्त प्रोटीन को पूर्ण प्रोटीन के रूप में जाना जाता है। पौष्टिक और सुपाच्य शाकाहारी प्रोटीन की उपस्थिति के कारण इसे शिशुओं, बच्चों, बुजुर्गो, गर्भवती और स्तनपान कराने वाली महिलाओं के लिए एक उत्कृष्ट भोजन माना जाता है।

सोयाबीन उत्पाद

सोयाबीन का आटा: साफ सोयाबीन को उबलते पानी में 20 मिनट के लिये उबालें और उसके बाद पानी से निकालकर धूप में सुखायें एवं सूखने पर पिसवा कर रखें और सोयाबीन आटा तैयार है। सोयाबीन के तैयार आटे को गेंहू के आटें या बेसन के साथ विभिन्न खाद्य पदार्थ बनाने के लिए मिलाया जा सकता है सूखे हुए सोयाबीन को गेंहू या चने के साथ भी

पिसवाया जा सकता है लेकिन

गेंहू तथा सोयाबीन का अनुपात 1:9 का होना चाहिए।

सोयाबीन दूध पेयः साफ किये हुये सोयाबीन या सोयाबीन की

दाल को भिगोकर 6–8 घंटे के लिये रख दें। तत्पश्चात 1 भाग सोयाबीन तथा 6 भाग पानी के साथ मिक्सी या ग्राइन्डर में पीसें तथा तैयांर स्लरी को 10 मिनट के लिये उबालें तत्पश्चात मलमल के कपड़े से छान लें और स्वाद अनुसार चीनी मिलायें। ठंडा करने पर मनपसंद की खुशबू मिलायें। सोयाबीन दूध तैयार है। इस प्रकार 1 किलोग्राम सोयाबीन से लगभग 6 लीटर दूध तैयार हो जाता है।

सोया पनीर : सोयाबीन का सर्वोत्तम खादय पदार्थ सोया पनीर है तथा यह आसानी से पच जाता है। आइसोफलेवान की मात्रा इसमें सर्वाधिक मिलती है तथा यह देखने में दूध के पनीर जैसा लगता है। जापान में इसको टोफू कहते हैं इसको आसानी से घर पर भी बनाया जा सकता है। इसको बनाने के लिये साफ सोयाबीन को उबलते पानी के साथ 1:9 के अनुपात में पीस लें तथा मलमल के कपड़े से छान लें दूध के समान तरल पदार्थ को उबालें तथा 5 मिनट के बाद तीन टेबलस्पून विनेगर या साइट्रिक एसिड या नींबू का रस से फाड़ दें तथा 5 मिनट के लिये बिना हिलाये डुलाये रख दें फिर मलमल के कपड़े में दबाकर रख दें लगभग 10 मिनट बाद कपड़े से निकालकर टूकड़ो में विभाजित कर दें। पानी में डुबोकर रखने से इसे 24 घंटे तक खराब होने से बचा कर रखा जा सकता है। सोयाबीन के दूध का पनीर सेचुरेटेड वसा से रहित होता है तथा मधुमेह व दिल के मरीजों के लिये कम कीमत का प्रोटीन स्रोत है।

वसा रहित आटे का उपयोगः सोयाबीन का वसारहित आटा प्रोटीन का बहुत ही अच्छा स्रोत है। इसमें 50–60 प्रतिशत प्रोटीन होता है और इसमें सोयाबीन की गन्ध भी बहुत कम आती है। इसको आसानी से प्रयोग में लाया जा सकता है। गेंहू के आटे में मिलाकर गेहूं के आटे से बनने वाले सभी व्यंजन बनाये जा

सकते हैं जैसे–रोटी, डबलरोटी, आदि खादय पदार्थो में 30 प्रतिशत मिलाने पर भी स्वाद में अन्तर नहीं आता है।

सोयाबीन पापड़ : घरों में पापड़ सामान्यतः उड़द या मूंग की दाल से बनाये जाते हैं। सोयाबीन पापड़ के लिये भी वसा रहित सोयाबीन के आटे को तैयार कर अन्य दालों के आटे के साथ मिलाकर पापड़ बनाने में उपयोग कर सकते हैं शोध द्वारा यह ज्ञात हो चुका है कि वसा रहित सोयाबीन का आटा पापड़ बनाने के लिये 80ः तक प्रयोग में लाया जा सकता है।

सोयाबीन की बड़ी : सोयाबीन 100 ग्राम, मूंग दाल 100 ग्राम, चना दाल 100 ग्राम, तथा उड़द दाल 100 ग्राम। सभी दालों को 8–10 घंटे के लिये पानी में भिगो दें उसके बाद अच्छी तरह साफ पानी से धो लें तथा इसमें

सोयाबीन के छिलके निकालकर धोयें। इसके बाद इसकी बड़ी बनाकर धूप मे सुखा लें व हवा बंद डिब्बे में रखें एवं आवश्यकतानुसार उपयोग करें।

सोया आधारित उघम इकाई का उदाहरण (पंजाब स्थित इकाई)

उत्पादः सोया दूध, टोफू, व्हे पेय पदार्थ

मासिक आयः रूपये 42,000 **बाजारः** मलेरकोट्ला, धुरि, संग्रुर,

रोजगारः 8 व्यक्ति लाधा, पी ए यू, लुधिआना

	सोया आधारित उघम इकाई	लागत/लाभ (रूपये/माह)
A.	**स्थिर लागत**	
i	मशीन की लागत	**7350000*/-**
B.	**परिवर्तनीय लागत**	
i	कच्चा माल लागत	135000/-
ii	बिजली (रूपये/माह)	4050/-
iii	कुल कार्य दिवस/माह	30
iv	श्रमिक संख्या	8
v	श्रमिक लागत (श्रमिक संख्या x मजदूरी दर)	16000/-
vi	मरम्मत और रखरखाव शुल्क	3500/-
vii	पैकिंग और पैकेजिंग लागत	3875/-
viii.	कुल नुकसान/माह	10,000/-
	कुल परिवर्तनीय लागत (i to viii)	**1,72,425/-**
C.	**कुल उत्पाद उत्पादन (क्विंटल/माह)**	**90**
D.	**उत्पाद का मुख्य लाभ (मात्रा*कीमत)**	**37,575/-**
E.	**सह उत्पाद मूल्य (मात्रा*कीमत)**	**5000/-**
F.	**सकल लाभ (D+E)**	**42,575/-**

*बाजार दर के हिसाब से मशीनो, बिजली, श्रम की कीमत अलग हो सकती है

निष्कर्ष

कोविड–19 महामारी के इस कठिन दौर में ग्रामीण उद्यमशीलता के विकसित होने से ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार तथा आय में वृद्धि होने की संभावनायें प्रबल होंगी। जिनसे ग्रामीण लोगों के जीवनयापन व सामाजिक–आर्थिक स्तर में सुधार होगा। वर्तमान में बढ़ती जनसंख्या, कृषि जोतों के घटते आकार, बढ़ती ग्रामीण बेरोजगारी से गांवों में पनप रही दूसरी विविध समस्याओं के समाधान मिलेंगे तथा ग्रामीण जीवन खुशहाली की पटरी पर पुनः अग्रसर होगा जिससे भारत वर्ष को विकसित देशों के समुदाय में प्रवेश हेतु तीव्र गति प्राप्त होगी।